

भारत सरकार
रेल मंत्रालय

लोक सभा
11.03.2026 के

अतारांकित प्रश्न सं. 3125 का उत्तर

डीजल लोकोमोटिव और ओवर हेड विद्युतीकरण में खराबी

3125. श्री संदिपनराव आसाराम भुमरे:

डॉ. शिवाजी बंडाप्पा कालगे:

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) गत तीन वर्षों के दौरान देश भर में डीजल इंजनों और ओवर हेड विद्युतीकरण (ओएचई) की खराबी के कारण ट्रेन समय-सारणी के पालन न करने और समयपालन से संबंधित डेटा की ज़ोन-वार वर्तमान स्थिति क्या है;
- (ख) क्या महत्वपूर्ण रेल पटरी रखरखाव प्रक्रिया (डीप स्क्रीनिंग) बीस वर्षों से लंबित है और यदि हाँ, तो सरकार द्वारा उक्त लंबित कार्य को पूरा करने के लिए विशेषकर महाराष्ट्र राज्य में क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जाने का प्रस्ताव है;
- (ग) विशेष रूप से महाराष्ट्र राज्य में रेल पटरी रखरखाव और डीप स्क्रीनिंग के लंबित कार्यों को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं/उठाए जाने का प्रस्ताव है;
- (घ) विभिन्न राज्यों, विशेष रूप से महाराष्ट्र राज्य में सिग्नल की खराबी, पटरियों की क्षति, भीड़भाड़ और रोलिंग स्टॉक से संबंधित समस्याओं के कारण ट्रेनों में होने वाले विलंब का अद्यतन डेटा क्या है; और
- (ङ) निरंतर बनी रहने वाली उक्त समस्याओं के समाधान के लिए जवाबदेही तय करने हेतु सरकार द्वारा किए गए उपायों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) से (ङ): भारतीय रेल समय पर रेलगाड़ी चलाने के लिए हर संभव प्रयास करता है। भारतीय रेल की समयबद्धता कई कारकों के कारण प्रभावित होती है जिनमें कोहरे का मौसम, मार्ग की बाधाएं, परिसंपत्ति का अनुरक्षण और अन्य मुद्दे, अलार्म चैन खींचना, आंदोलन, मवेशी का रेलपथ पर आना और अन्य अप्रत्याशित परिस्थितियां शामिल हैं।

भारतीय रेल द्वारा रेलगाड़ियों की समयबद्धता में सुधार के लिए कई कदम उठाए गए हैं। इनमें यात्री रेलगाड़ियों के संचालन की मंडल, क्षेत्रीय और रेलवे बोर्ड स्तर पर गहन निगरानी, परिसंपत्तियों की विश्वसनीयता बढ़ाने हेतु अनुरक्षण के लिए रोलिंग ब्लॉक प्रणाली की शुरुआत, योजनाबद्ध तरीके से

अवसंरचनात्मक बाधाओं को दूर करना और वैज्ञानिक तरीके से समय सारणी का युक्तिकरण शामिल है।

इसके अलावा, यात्री रेलगाड़ियों के आगमन/प्रस्थान की वास्तविक समय और उचित सूचना सुनिश्चित करने के लिए, डेटा लॉगर का उपयोग किया जा रहा है।

सुधार पर निरंतर ध्यान देने से परिसंपत्ति विश्वसनीयता में सुधार और बेहतर समयबद्धता प्रदर्शन में सहायता मिली है, जो नीचे दिए गए हैं:

वर्ष	समयपालन
2023-24	73.62 प्रतिशत
2024-25	77.12 प्रतिशत
2025-26 (फरवरी 2026 तक)	77.24 प्रतिशत

भारतीय रेल प्रतिदिन लगभग 25,000 रेलगाड़ियां परिचालित करता है और लोको/ओएचई सहित परिसंपत्ति विफलता की घटनाएं केवल 2 प्रतिशत हैं। असामान्य घटनाओं का विश्लेषण किया जाता है और तदनुसार उचित सुधारात्मक उपाय किए जाते हैं।

रेलगाड़ियों के सुरक्षित परिचालन को सुनिश्चित करने के लिए रेलपथ, चल स्टॉक, ओएचई, सिगनल प्रणाली आदि सहित सभी रेल संपत्तियों का नियमित निरीक्षण और अनुरक्षण निर्धारित मानदंडों के अनुसार किया जाता है। इनकी नियमित निगरानी क्षेत्रीय रेलों के सभी मंडलों/डिपो और कारखानों आदि में नामित अधिकारियों द्वारा की जाती है। सुरक्षित रेलगाड़ी परिचालन सुनिश्चित करने के लिए निवारक अनुरक्षण भी किया जाता है। इन मानकों को बेहतर बनाने के लिए कर्मचारियों को नियमित रूप से परामर्श और प्रशिक्षित किया जाता है।

भारतीय रेल ने परिसंपत्ति विश्वसनीयता में सुधार के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक उपायों को चिह्नित किया है और उन्हें लागू किया है। इसके अलावा, रेलवे ने विशेष समयपालन अभियान शुरू करने और रेलगाड़ी परिचालन में शामिल कर्मचारियों को संवेदनशील बनाने जैसे विभिन्न उपाय शुरू किए हैं।

डीजल इंजन, शिरोपरि उपस्कर (ओएचई) विफलता, सिगनल विफलता, रेलपथ, भीड़भाड़ और चल स्टॉक मुद्दों जैसी परिसंपत्तियों के अनुरक्षण के कारण समय की पाबंदी में होने वाली हानि की घटनाओं की निगरानी की जाती है और मूल कारणों की पहचान करने और सुधारात्मक कार्यों के लिए तुरंत विश्लेषण किया जाता है।

डीजल रेल इंजन और ओएचई की विश्वसनीयता में सुधार लाने के लिए कई सुधारात्मक उपाय किए गए हैं, जो इस प्रकार हैं:

डीजल इंजन:

भारतीय रेल की संकट प्रबंधन योजना के लिए डीजल इंजन महत्वपूर्ण हैं। विश्वसनीयता को बनाए रखने और सुधारने के लिए इस महत्वपूर्ण संपत्ति के अनुरक्षण पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, जैसे:

- डीजल इंजनों में लोकोमोटिव और रेलगाड़ियों की रिमोट मॉनिटरिंग और प्रबंधन (आरईएमएमएलओटी) का प्रावधान।
- डब्ल्यूडीजी4जी/6जी लोकोमोटिव में समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए पूरे भारत में त्वरित प्रतिक्रिया दल की तैनाती।
- बेहतर विश्वसनीयता के लिए कंप्यूटर नियंत्रित ब्रेक प्रणाली जैसे घटकों की अनुरक्षण आवधिकता में सुधार।

शिरोपरि उपस्कर (ओएचई): शिरोपरि उपस्कर विश्वसनीय रेलगाड़ी परिचालन के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय रेल ने नियमित आवधिक अनुरक्षण और विशेष प्रयास के माध्यम से शिरोपरि उपस्कर विश्वसनीयता में सुधार किया है। नियोजित पैदल गश्त, नियमित टावर-वैगन निरीक्षण, टीआरडी ऑडिट और पुरानी परिसंपत्तियों के व्यवस्थित प्रतिस्थापन ने प्रणाली के निष्पादन को सुदृढ़ किया है। पिछले 02 वर्षों में विफलताओं में निरंतर कमी देखी गई है। अपनाई कुछ अच्छी पद्धतियां हैं जैसे:

- रेलपथ के किनारे पेड़ों की पहचान के लिए सर्वेक्षण, जो शिरोपरि उपस्कर विफलता और उनकी छटाई/कटाई के लिए संभावित हो सकते हैं।
- प्रदूषित क्षेत्रों में इन्सुलेटरों की निरंतर सफाई।
- मौसम में बदलाव के प्रभाव को कम से कम करना, हर मौसम में ऑटो टेन्शनिंग डिवाइसेस (एटीडी) के पैरामीटर की स्वतंत्र आवाजाही और समायोजन सुनिश्चित करना।
- क्रॉसओवर और टर्नआउट, शिरोपरि उपस्कर मानदंड और इसके समायोजन की जांच के लिए विशेष प्रयास।
- निर्धारित अनुरक्षण पद्धतियों के पालन को सुदृढ़ करने के लिए डिपो स्तर पर नियमित परामर्श सत्र।
- मानक पद्धतियों के संदर्भ में कमियों और अंतरालों की पहचान करने के लिए अन्य डिपो द्वारा अनुरक्षण डिपो के क्रॉस ऑडिट।
- अनुरक्षण कर्मियों के लिए नियमित प्रशिक्षण।
- पुरानी परिसंपत्तियों का समय पर प्रतिस्थापन और कैटेनेरी और संपर्क तारों का शर्तों के आधार पर प्रतिस्थापन।
- टूटे हुए और फ्लैश वाले आइसोलेटरों की पहचान और विशेष प्रयास से उनका प्रतिस्थापन।

रेलपथ अनुरक्षण (डीप स्क्रीनिंग):

एक प्रमुख मशीनीकृत अनुरक्षण गतिविधि के रूप में रेलपथ सुदृढ़ता, स्थिरता और जल निकासी के लिए गिट्टी की डीप स्क्रीनिंग की जाती है। यह कार्य उच्च आउटपुट सहित गिट्टी सफाई मशीनों (बीसीएम) का उपयोग करके किया जाता है।

गिट्टी सफाई मशीनें (एचओबीसीएम) न्यूनतम मानव हस्तक्षेप के साथ रेलपथ की कुशल और समान सफाई सुनिश्चित करती हैं।

इससे पहले, 2021 तक, समय के आधार पर डीप स्क्रीनिंग की गई थी। इस दृष्टिकोण को अब एक स्वच्छ गिट्टी आधारित मानदंड में संशोधित किया गया है, जिससे प्रक्रिया वैज्ञानिक और वास्तविक क्षेत्र की स्थितियों को प्रतिबिंबित करती है। संशोधित मानदंडों के अनुसार, मुख्य लाइन रेलपथ की डीप स्क्रीनिंग तब निर्धारित की जाती है जब स्वच्छ गिट्टी 200 मिमी से कम हो जाता है। पिछले पांच वर्षों के दौरान एचओबीसीएम सहित 65 बीसीएम को शामिल करने के साथ मशीनीकृत क्षमता को भी काफी मजबूत किया गया है, जिसने डीप स्क्रीनिंग के लिए भारतीय रेल की समग्र क्षमता को बढ़ाया है।

एक समान कार्यान्वयन और गुणवत्ता नियंत्रण का समर्थन करने के लिए, डीप स्क्रीनिंग की कुशलता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विस्तृत दिशानिर्देश और मानक संचालन प्रक्रियाएं जारी की गई हैं। परिचालन संबंधी योजना में सुधार जिसमें बैलास्ट, उपकरण, यंत्र और प्रशिक्षित जनशक्ति की अग्रिम व्यवस्था के साथ-साथ बेहतर कार्य निर्धारण और कार्यक्रम शामिल है, द्वारा तीव्र कार्यान्वयन और संसाधनों की बेहतर उपयोगिता सुनिश्चित की गई है। उनकी परिचालन संबंधी संवेदनशीलता को ध्यान रखते प्वाइंटों और क्रॉसिंगों को विशेष प्राथमिकता भी दी गई है। इन स्थानों पर सुरक्षित और समन्वित निष्पादन की सुविधा के लिए विशेष दिशानिर्देश और एक संयुक्त प्रक्रिया आदेश (जेपीओ) जारी किया गया है।

उन्नत मशीनीकरण और संरचित कार्यान्वयन प्रक्रियाओं द्वारा समर्थित आयु-आधारित दृष्टिकोण से स्थिति-आधारित दृष्टिकोण में परिवर्तन ने डीप स्क्रीनिंग में गहन स्क्रीनिंग की गति, दक्षता और गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है।

डीप स्क्रीनिंग की कुल प्रगति लगातार बढ़ रही है जो निम्नानुसार है:

क्र.सं.	वर्ष	प्रगति (रेलपथ कि.मी. में)
1	2020-21	9985
2	2021-22	10056
3	2022-23	10766
4	2023-24	14935
5	2024-25	15433
